CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिं 30८

कबीरदास

टीकाकार

वियोगी हरि

हिं 30८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सत्साहित्य-प्रकाशन

१५४९३

कबीरदास

–जीवन-परिचय और चुने हुए पद–

वियोगी हरि

हि ३०८

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९५९

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५९
मूल्य
पचास नये पैसे

मुद्रक
उद्योगशाला प्रेस,
दिल्ली-९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हि. 305

प्रकाशकीय

हमारे देश में संत-साहित्य का शायद ही कोई ऐसा पाठक होगा, जिसने कबीर का नाम न सुना हो और उनकी कोई-न-कोई रचना न पढ़ी हो। यहांतक कि कभी-कभी बिना पढ़े-लिखे लोगों के मुंह से भी कबीर के पद सुनाई दे जाते हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि संत-साहित्य में कबीर की रचनाओं का प्रमुख स्थान है। उन्होंने ऊंची-से-ऊंची बातें कहीं हैं, पर इतनी सरल भाषा में कि मामूली पढ़ा-लिखा या अपढ़ व्यक्ति भी उन्हें समझ सकता है।

कबीर का जन्म कब और कहां हुआ और उनके माता-पिता कौन थे, वह किस जाति के थे, इसका किसीको पता नहीं; लेकिन उन्होंने जो विचार दिये हैं, वे ऐसे हैं कि उनके कारण हिन्दू-मुसलमान सब उन्हें अपना मानते हैं।

इस पुस्तक की सारी सामग्री 'मण्डल' से प्रकाशित 'संत-सुधा-सार' में निकल चुकी है, लेकिन इसका अधिक-से-अधिक प्रचार और प्रसार हो, इस दृष्टि से इसे अलग-से प्रकाशित किया जा रहा है और सामान्य स्थिति के पाठक भी इसे खरीद सकें, इसलिए इसका मूल्य कम रक्खा जा रहा है।

हमें विश्वास है कि पाठकों को इस तथा ऐसी ही अन्य पुस्तकों के पठन-पाठन से लाभ होगा।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषय-सूची

१. जीवन-वृत्त ५

२. सबद ११

३. साखी ३९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हि. 305

कबीरदास

: १ :

जीवन-वृत्त

महात्मा कबीरदास का आविर्भाव काशीपुरी में, संवत् १४५६ वि० में, हुआ था। भारत में उस समय सिकन्दर लोदी का राज्य था। इनके माता-पिता के नाम अज्ञात हैं। काशी के नीरू नामक जुलाहे और उसकी पत्नी नीमा ने इनका पालन-पोषण किया था।

कहते हैं कि काशी का नीरू जुलाहा जब अपनी स्त्री का गौना कराकर घर को लौट रहा था, तब रास्ते में उसे लहरतारा तालाब पर एक हाल का जन्मा बालक पड़ा दिखाई दिया। उस नवजात बालक को उठाकर वह घर ले आया, यद्यपि लोकापवाद के डर से नीमा ने पति को ऐसा करने से रोका। यही परित्यक्त बालक आगे चलकर कबीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी अपनी 'कबीर' पुस्तक में गहरी गवेषणा के परिणामस्वरूप इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि कबीरदास का पालन-पोषण जिस जुलाहे के घर पर हुआ था, वह नवधर्मान्तरित मुसलमान-कुल था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वामी रामानन्दजी को कबीरदास ने अपना सद्गुरु स्वीकार किया था—"काशी में हम प्रगट भये हैं, रामानन्द चेताये।" सद्गुरु के प्रति कबीर ने ज्वलन्त श्रद्धाभाव अनेक साखियों व सबदों में प्रकट किया है।

मगर मुसलमान कबीर-पन्थी मानते हैं कि कबीर ने सूफी फकीर शेख तकी से गुरु-दीक्षा ली थी। इसके प्रमाण में यह वाक्य प्रस्तुत किया जाता है—"घट-घट है अविनासी सुनहु तकी तुम शेख।" पर इससे यह बात सिद्ध नहीं होती कि शेख तकी कबीर के गुरु थे। 'शेख' शब्द का प्रयोग यहाँ विशेष आदरभाव से नहीं किया गया है, बल्कि शेख तकी को उलटे उपदेश-सा दिया गया है। हाँ, यह सम्भव है कि ऊँजी के पीर शेख तकी का सत्संग कुछ कालतक उन्होंने किया हो।

ज्ञान-भक्ति की संतत साधना करते हुए भी कबीर ने अपना घरेलू व्यवसाय नही छोड़ा था। "हम घर सूत तनहि नित ताना।" किन्तु कपड़ा बुनते समय भी लौ उनकी राम से ही लगी रहती थी। ताने-बाने के रूपक के अनेक सुन्दर सबद कबीर के मिलते हैं।

एक लोक-प्रचलित कथा है। कहते हैं कि एक दिन एक थान बुनकर कबीर साहब उसे बाज़ार में बेचने के लिए घर से निकले। रास्ते में एक साधु मिल गया। उसने कहा, "बाबा, ला कुछ दे दे।" इन्होंने आधा थान फाड़कर उसे दे दिया। "पर इतने से तो, बाबा, मेरा काम नहीं चलेगा।" कबीरसाहब ने दूसरा आधा थान भी दे दिया, और प्रसन्न-चित्त घर लौट आये।

अन्य अनेक संत-महात्माओं की तरह कबीरसाहब के विषय में भी कितनी ही अलौकिक चमत्कारपूर्ण लोक-कथाएं प्रसिद्ध हैं, जैसे—व्यापारी के भेष में भगवान् का कबीर के घर पर सन्तों के भण्डारे के लिए आटा, घी, शक्कर आदि बैलों पर लादकर ले जाना, दिव्यदृष्टि से यह देखकर कि पुरी में जगन्नाथजी का वस्त्र आग से जलना चाहता है, कबीर का दूर से ही पानी डालकर आग को बुझा देना, और जब बादशाह सिकन्दर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लोड़ी ने पाया कि कबीर स्वयं ही अपनेको ईश्वर मानता है, तो क्रोध में आकर उन्हें आग में फेंकवाना, पर उनका उससे साफ बच जाना, फिर उन्हें चिरवाने के लिए हाथी भेजवाना, पर उनके सामने से मारे डर के हाथी का भाग जाना, इत्यादि, इत्यादि।

आयु का प्रायः सारा ही भाग मोक्षदायिनी काशीपुरी में कबीरसाहब ने बिताया, पर मृत्यु के समय वह मगहर चले गये—

'सकल जनम सिवपुरी बिताया,
मरति बार मगहर उठि धाया।'

प्रसिद्ध है कि काशी में प्राण त्यागने से मुक्ति मिलती है, और मगहर में मरने से नरक। कबीर इस लोकप्रचलित अन्ध धारणा के क़ायल नहीं थे। उन्होंने कहा—

'जो काशी तन तजै कबीरा।
तो रामहिं कौन निहोरा?'

कहते हैं कि मगहर में कबीरसाहब के हिन्दू और मुसलमान शिष्यों में उनके शव को लेकर झगड़ा खड़ा हो गया था। हिन्दू कहते थे कि हम दाह-संस्कार करेंगे, और मुसलमान कहते थे कि उन्हें वे दफनायेंगे। मगर जब कफन को उठाकर देखा, तो वहाँ कबीरसाहब का शव नहीं था, उसकी जगह कुछ फूल बिखरे पड़े थे। हिन्दू-मुसलमानों ने उन फूलों को आपस में आधा-आधा बाँट लिया।

कबीरसाहब की जैसी बानी अलौकिक, वैसी ही उनकी लोकप्रसिद्ध जीवन-कथा भी अलौकिक। कबीर तथा उनकी कोटि के अन्य अनेक संतों की जीवन-कथाएँ तथाकथित इतिहास की वस्तु नहीं हैं। उन्होंने कहाँ, कब, किस कुल में पंचरंग चोला धारण किया, और कहाँ और कब उसे उतारकर रख दिया, इस सबकी खोज में उलझना व्यर्थ-सा लगता है। उनका जीवन-दर्शन तो उनकी रसवंती बानी के पद-पद में झलकता है। तो फिर उसीको साधना के सहारे गहरे उतरकर क्यों न खोजा जाय?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बानी-परिचय

'भक्तमाल' में नाभाजी ने कहा है—

आरूढ़ दसा ह्वै जगत परमुख-देसी नाहिंन भनी।'

कबीर ने जो कुछ भी कहा, अपने खुद के जीवित-जागृत अनुभव से कहा, दूसरों के मुँह की कही बात नहीं कही। पढ़-पढ़कर भी कोई बात नहीं कही—

'मसि कागद छूयौ नहीं, कलम गही नहिं हाथ।'

जो भी कहा अनूठा ही कहा, किसीका जूठा नहीं। इसीलिए जिस किसीने केवल शास्त्रीय पांडित्य का सहारा लेकर कबीर के सिद्धान्तों की गवेषणा और आलोचना की, वह अपने प्रयत्न में प्रायः सफल नहीं हुआ। कबीर के तत्वदर्शन की थाहतक दार्शनिक विवेचन और विश्लेषण के द्वारा नहीं, प्रत्युत सत्य की सहज साधना के द्वारा ही पहुँचा जा सकता है। कबीर की बानी में जहाँ हम ज्ञान-विज्ञान का सूक्ष्म-से-सूक्ष्म निरूपण पाते हैं, वहाँ योग का गूढ़ातिगूढ़ भेद भी मिलता है और भक्ति का गहरे-से-गहरा रहस्यवाद भी। वेदान्त भी उसमें पूरा-पूरा उतरा है, और साथ-ही सूफी सिद्धान्त भी। किन्तु वहाँ उनकी तत्वदर्शन की विविध विवेचनाएँ तथा मान्यताएँ उन्हीं सब अर्थों में नहीं मिलेंगी, जिन अर्थों में उन्हें हम अनेक शास्त्रों में सामान्यतया स्थिर पाते हैं, परिणामतः उनके आधार पर कबीर के स्वानुभूत तत्वदर्शन का विवेचन और विश्लेषण एकांगी और अधूरा रहता है।

कबीर की निपट गहरी और ऊँचे घाट की बानी के विषय में ऊपर-ऊपर से कुछ कहा जा सकता है, तो केवल इतना ही कि—

१. उसमें निरपेक्ष ज्ञान-विज्ञान की ओर पद-पद पर गूढ़ संकेत हैं। पर वह लोगों को धोखे में नहीं रखना चाहती। वह 'गुन में निरगुन की और निरगुन में गुन' की बात बताती है—निर्गुन भी उसका अनूठा और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सगुन भी उसका अनूठा। उसका प्रतिपाद्य ब्रह्म इसी प्रकार द्वैत और अद्वैत दोनों से ही परे, और ऐसा ही उसका राम भी।

२. उस बानी में जगह-जगह पर योगमार्ग का उल्लेख आया है। पर रास्ता वह वैसा टेढ़ा-मेढ़ा और विकट नहीं है, तथापि योगी तो उसे फिसलता हुआ ही दिखाई देता है। योग उसका सहज-ही-सहज है, वैसा ही जैसा कि आत्मा का परमात्मा से मिलन। खुद ही थके-माँदे मार्ग-दर्शक प्रियतम के निकट कैसे पहुँच सकते हैं?

३. भक्ति-मार्ग पर चलने की वह सलाह देती है। कहती है कि बड़े चाव से, 'जतन करो सखि पिया मिलन की।' राह रपटीली है, उस-पर गिर-गिरकर और उठ-उठकर बड़े जतन से चलना पड़ता है, और जब उस ठौर पर पहुँचते हैं, लाल की लाली में सभी कुछ रँगा हुआ दीखता है। सो, 'भक्ति-मार्ग' भी उसका अपना ही है।

४ बाह्याचारों की उसे तनिक भी अपेक्षा नहीं—उसकी दृष्टि में वह कुवाट है। भले ही चला करें पंडित-पांडे और शेख-मुल्ले उस रास्ते से, वह अपने साधु भाई*को उसपर कभी नहीं चलने व भटकने देगी।

५. हिन्दू और मुसलमान दोनों ही, उसकी नज़र में, सही रास्ते नहीं जा रहे थे, दोनों ही अहं या खुदी को गले से लगाये उल्टी राह चल रहे थे, तो उन्हें तो उसे फटकारना ही था, उन्हें ही जो वेद और कुरान की गहराई में न पैठकर उनके पन्नों के उलटने-पलटने में ही अपनी पंडि-ताई और मुल्लाई को खर्च कर रहे थे।

६. सत्य की राह में जो भी आड़े आया, उसे उसने बख्शा नहीं। कर्मकांड, जात-पाँत और छूआछूत को चिपटाये जिसे भी उसने देखा, गुम-राह पाया, उसे झकझोर डाला। उसके प्रखर प्रवाह में तिनके की तरह बह गये सारे बाह्याचार, सारे मिथ्याचार।

७. भाषा को उस बानी का 'अधिनायकत्व' स्वीकार करना पड़ा। उसके विद्युत्-वेग को देखकर वह दिङ्-मूढ़-सी हो गई। उसके एक-एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इंगित पर मोहित भाषा ने अपने रूप को काँपते हुए साधा और सँवारा।

ऐसी है कबीर की अनूठी बानी! कौन और कैसे उसका बखान करे? बेचारा पंगु साहित्य-समीक्षक कहाँ पहुँच सकेगा उस अत्यन्त ऊँचे घाटतक।

प्रस्तुत सार-संग्रह में थोड़े-से सबदों और साखियों को ही हमने लिया है, रमैनी नहीं, उलटबाँसी एक भी नहीं। केवल ऐसे ही अंगों को लिया है, जिनमें सतगुरु और नाम की महिमा, प्रेम और विरह का निरूपण, शील और सदाचार का विवेचन तथा बाह्याचारों और मूढ़ाग्रहों का खण्डन किया गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: २ :

सबद

दुलहनी, गावहु मंगलचार ।
हम घरि आये हो राजा राम भरतार ।।
तन रत करि मैं मन रत करिहूँ, पंचतत मोर बराती ।
रामदेव मोरै पाँहुँने आये, मैं जोबन मैं माती ।।
सरीर सरोबर बेदी करिहूँ, ब्रह्मा बेद उचारा ।
रामदेव संगि भाँवरि लैहूँ, धंनि धंनि भाग हमारा ।।
सुर तेतीसूं कौतिग आये, मुनियर सहस अठासी ।
कहैं कबीर हम ब्याहि चले हैं, पुरिष एक अबिनासी ।।१।।

जो पैं करता बरण बिचारै ।
तौ जनमत तीनि डांडि किन सारै ।।टेक।।
उतपति ब्यंद कहां थैं आया, जोति धरी अरु लागी माया ।
नहीं को ऊंचा नहीं को नीचा, जा का प्यंड ताही का सींचा ।।
जो तू बांभन बंभनी जाया, तौ आन बाट ह्वै काहे न आया ।

---

१. भरतार = स्वामी । रत = अनुरक्त । पाहुनैं = अतिथि, वर । भाँवरि = फेरे, अग्नि की परिक्रमा, जो विवाह के समय वर और वधू मिलकर देते हैं । कौतिग = कौतुक । मुनियर = मुनिवर ।

२. जोपै....सारै = यदि सरजनहार ने चार वर्णों के भेद का विचार किया है, तो जन्म से ही एकसमान सबके साथ वह भौतिक, दैहिक और दैविक ये तीन दण्ड क्यों लगा देता ? खतना = सुन्नत,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जो तूं तुरक तुरकनी जाया, तौं भीतरि खतना क्यूँ न कराया ।।
कहै कबीर मधिम नहीं कोई,सो मधिम जा मुखि रांम न होई ।।२।।

हम तौं एकएक करि जानां ।
दोइ कहैं तिनहीं कौं दोजग, जिन नाहिंन पहिचानां ।।
एकै पवन एक ही पानीं, एक जोति संसारा ।
एक ही खाक घड़े सब भांडे, एक ही सिरजनहारा ।।
जैसैं बाढ़ी काष्ठ को काटै, अगिनि न काटैं कोई ।
सब घटि अंतरि तूं ही व्यापक, धरैं सरूपैं सोई ।।
माया मोहे अर्थ देखि करि, काहे कूं गरबानां ।
नरभै भया कछू नहीं व्यापै, कहै कबीर दीवानां ।।३।।

बागड़ देस लूवन का घर है,
तहां जिनि जाइ दाझन का डर हैं ।।टेक।।
सब जग देखौं कोई न धीरा, परस धूरि सिरि कहत अबीरा ।
न तहाँ सरवर न तहाँ पाणी, न तहाँ सतगुर साधू बांणी ।।
न तहाँ कोकिल न तहाँ सूवा, ऊँचै चढ़ि चढ़ि हंसा मूवा ।
देस मालवा गहर गंभीर, डग डग रोटी पग पग नीर ।।
कहै कबीर घरहीं मन मानां, गूंगे का गुड़ गूंगै जाना ।।४।।

एक मुस्लिम संस्कार, जिसमें मूत्रेन्द्रिय के अगले भाग का चमड़ा काट देते हैं । भीतर=गर्भ में ही । मधिम=हलका, उतरकर ।

३. एक-एक करि=अभेद-रूप से । दोजग=दोजख, नरक, दुर्गति । बाढ़ी=बढ़ई । दिवानां—दीवाना, मस्त ।

४. बागड़=मरुभूमि, यहाँ त्रिताप-सन्तप्त संसार से अभिप्राय है । लूवन का घर=जहाँ दिन-रात लुवें (गरम हवा) चलती हों ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काहे कूं माया दुख करि जोरी,
हाथि चूंन, गज पांच पछेवरी ।।टेक।।
नां को बंध न भाई साथी, बांधे रहे तुरंगम हाथी ।।
मैड़ी महल बावड़ी छाजा, छाड़ि गये सब भूपति राजा ।
कहै कबीर राम ल्यौ लाई, धरी रही माया काहू खाई ।।५।।

हरि जननी मैं बालिक तेरा, काहे न औगुण बकसहु मेरा ।।टेक।।
सुत अपराध करै दिन केते, जननी कै चित रहैं न तेते ।।
कर गहि केस करै जौ घाता, तऊ न हेत उतारै माता ।
कहै कबीर एक बुधि बिचारी, बालक दुखी दुखी महतारी ।।६।।

राम बान अन्ययाले तीर, जाहि लागैं सो जानैं पीर ।।टेक।।
तन मन खोजौं चोट न पाऊं, औषध मूली कहां घसि लाऊं ।
एकहीं रूप दीसैं सब नारी, ना जानौं को पीयहि पियारी ।।
कहै कबीर जा मस्तिक भाग, ना जानूं काहू देई सुहाग ।।७।।

दाझन का=जलने का। मालवा=प्रियतम के हरेभरे लोक से अभिप्राय है।

५. पछेवरी=पिछौरी, छोटा-सा दोपट्टा। बंध=बंधु। मैड़ी=मेड़, राज्य की सीमा। छाजा=छज्जा।

६. बकसहु=माफ करो। न हेत उतारै=स्नेहभाव में कमी नहीं करती है।

७. अन्ययाले=अनियारे, तेज नौकवाले। नारी=स्त्री, जीवात्मा। काहू=किसको।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राम बिन तन की ताप न जाई,
जल मैं अगिनि उठी अधिकाई ।।टेक।।
तुम्ह जलनिधि मैं जलकर मीनां,
जल मैं रहौं जलहि बिन षीनां ।
तुम्ह प्यंजरा मैं सुवनां तोरा,
दरसन देहु भाग बड़ मोरा ।।
तुम्ह सतगुर मैं नौतम चेला,
कहैं कबीर रांम रमूं अकेला ।।८।।

राम भंणि राम भंणि राम चिंतामणि,
भाग बड़े पायो छाड़ै जिनि ।।टेक।।
असंत संगति जिनि जाइ रे भुलाइ,
साध संगति मिलि हरिगुण गाइ ।
रिदा कँवल मैं राखि लुकाइ,
प्रेम गांठ दे ज्यूं छूटि न जाइ ।।
अठ सिधि नव निधि नाँव मंझारि,
कहै कबीर भजि चरन मुरारि ।।९।।

डगमग छाड़ि दे मन बौरा ।
अब तो जरें वरें बनि आवै, लीन्हों हाथ सिंधौरा ।।टेक।।

---

८. षीनां = क्षीण, दुर्बल । सुवनां = तोता । नौतम = बिल्कुल नया ।
९. भंणि = कह, जप । रिदा कँवल = हृदय-कमल । राखि लुकाइ = छिपाकर रख । ज्यूं = जिससे कि । नांव मंझारि = रामनाम में ही ।
१०. डगमग = दुविधा । सिंधौरा = सिंदोरा, सौभाग्यसूचक सिंदूर रखने की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होइ निसंक मगन ह्वै नाचौ, लोभ मोह भ्रम छाडौ।
सूरा कहा मरन थैं डरपै, सती न संचैं भांडौ॥
लोक वेद कुल की मरजादा, इहै गलै में पासी।
आधा बलिकरि पीछा फिरिहै, ह्वै है जग में हासी॥
यहु संसार सकल है मैला, राम कहैं ते सूचा।
कहै कबीर नांव नहीं छाड़ौं, गिरत परत चढ़ि ऊंचा॥१०॥

जौपैं पिय के मनि नहीं भायें, तौ का परोसनि कैं हुलरायैं॥
का चूरा पाइल झमकांयै, कहा भयो बिछवा ठमकांयैं।
का काजल स्यंदूर के दीयै, सोलह स्यंगार कहा भयौ कीयैं॥
अंजन मंजन करै ठगौरी, का पचि मरै निगौड़ी बौरी।
जौपैं पतिव्रता है नारी, कैसैं ही रहौ सो पियहि पियारी॥
तन मन जोवन सोंपि सरीरा, ताहि सुहागिन कहै कबीरा॥११॥

कहा करौं कैसै तिरौं भौजल अति भारी।
तुम्ह सरणागति केसवा, राखि राखि मुरारी॥टेक॥

डिबिया, जिसे लेकर सती अपने पति के शव के साथ जाती थी। न संचैं भांडौ=शरीर को रखने का लोभ नहीं करती हैं। पासी=फाँसी। सूचा=पवित्र। चढ़ि ऊँचा=ऊँचे ब्रह्मपद पर पहुँच जाओ।

११. तौ का···हुलरायें=तब पड़ोसिन के पुत्र को दुलार-प्यार करने से क्या होता है? चूरा=चूड़ा, कड़ा। पाइल=पाजेब। झमकायैं=बजाने और चमकाने से। बिछुवा=पैर की अंगुलियों में पहनने का एक गहना। ठगौरी=मोहिनी। निगौड़ी=जिसके आगे-पीछे कोई न हो, अभागिनी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घर तजि वनखंडि जाइये, खनि खइये कंदा ।।
विषै विकार न छूटई, ऐसा मन गंदा ।
विष विषया की बासना तजौं तजी नहीं जाई ।।
अनेक जतन करि सुरझिहैं, फुनि फुनि उरझाई ।
जीव अछित जोवन गया, कछू किया न नीका ।।
यहु हीरा निरमोलिका कौड़ी पर बीका ।
कहैं कबीर सुनि केसवा, तूं सकल-बियापी ।।
तुम्ह समान दाता नहीं, हमसे नहीं पापी ।।१२।।

तेरा जन एक आध है कोई ।
काम-कोध अरु लोभ-विवर्जित हरिपद चीन्हैं सोई ।।टेक।।
राजस तांमस सातिग तीन्यूं ये सब तेरी माया ।।
चौथे पद कौं जे जन चीन्हैं तिनहि परमपद पाया ।
असतुति निंद्या आसा छांडै तजै मांन अभिमानां ।।
लोहा कंचन सम करि देखै ते मूरति भगवाना ।
च्यंतै तो माधो च्यंतामणि, हरिपद रमै उदासा ।।
त्रिस्ना अरु अभिमान रहत है, कहै कबीर सो दासा ।।१३।।

तूं माया रघुनाथ की खेलणे चली अहेड़ै ।
चतुर चिकारे चुणि चुणि मारे, कोई न छोड्या नेडै ।।टेक।।

---

१२. खनि=खोदकर । विष विषिया=इन्द्रियों के विषैले भोग । फुनि फुनि=पुनः पुनः, फिर फिर ।

१३. विवर्जित=रहित । सातिग=सात्विक । चौथा पद=गुणातीत, समाधि-अवस्था । उदासा=अनासक्त ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुनियर पीर डिगम्बर मारे, जतन करंता जोगी ।।
जंगल महिं के जंगम मारे, तूं रे फिरै बलिवन्ती ।
वेद पढंता बांम्हण मारा, सेवा करता स्वांमी ।।
अरथ करंता मिसर पछाड्या, तूं रे फिरै मैमंती ।
साषित कै तूं हरता करता, हरि-भगतन कै चेरी ।।
दास कबीर राम कै सरनै, ज्यूं लागी त्यूं तोरी ।।१४।।

जाइ रे दिन ही दिन देहा । करिलै बौरी रांम-सनेहा ।।टेक।।

बालापन गयो, जोवन जासी । जुरा मरण भौ संकट आसी ।
पलटे केस नैन जल छाया । मूरिख चेति बुढ़ापा आया ।।
रांम कहत लज्या क्यूं कीजै । पल पल आउ घटै तन छीजै ।
लज्या कहै हूं जम की दासी । एकै हाथि मुदिगर दूजै
हाथि पासी ।।
कहै कबीर तिनहूं सब हार्‌या । रांम नांम जिनि मनहु
बिसार्‌या ।।१५।।

कहु पांड़े सुचि कवन ठांव ।
जिहि घरि भोजन बैंठि खाव ।।टेक।।

---

१४. अहेड़ै=अहेर, शिकार । चिकारा=छिकरा, हिरन की जाति का एक फुर्तीला जानवर । नेड़ै=पास । डिगम्बर=दिगम्बर, नग्न साधु । जंगम=चलता-फिरता साधु । मिसर=कथावाचक से अभिप्राय है । मैमंती=मतवाली । साषित=वाममार्गी, हरि-विमुख । ज्यूं लागी त्यूंतोरी =आसक्ति को तत्काल तोड़ दिया ।

१५. जासी=जायगा । जुरा=जरा, बुढ़ापा । भौ=भय । आसी=आयेगा । पलटे केस=काले बाल सफेद हो गये । आउ=आयु । छीजै=क्षीण होता जाता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माता जूठी पिता पुनि जूठा, जूठे फल चित लागे।
जूठा आवन जूठा जानां, चेतहु क्यूं न अभागे॥
अंन जूठा पानी पुनि जूठा, जूठे बैठि पकाया।
जूठी कड़छी अंन परोस्या, जूठे जूठा खाया॥
चौका जूठा गोबर जूठा, जूठा सभी पसारा।
कहै कबीर तेइ जन सूचे, जे हरि भज तजहिं विकारा॥१६॥

अलह रांम जीऊं तेरे नाईं,
बन्दे ऊपरि मिहिर करौ मेरे साईं॥टेक॥
क्या ले माटी भुंइ सूं मारै, क्या जल देह न्हवायें।
जोर करै मसकीन सतावै, गुन ही रहैं छिपायें॥
क्या तु जू जप मंजन कीयें, क्या मसीति सिर नायें।
रोजा करैं निमाज गुजारैं, क्या हज काबै जायें॥
बाम्हण ग्यारसि करै चौबीसों, काजी मुहरम जान।
ग्यारह मास जुदे क्यूं कीये, एकहि मांहिं समान॥
जौ रे खुदाइ मसीति बसत है, और मुलिक किस केरा।
तीरथ मूरति रांम-निवासा, दुहु में किनहूँ न हेरा॥
पूरब दिसा हरी का बासा, पच्छिम अलह मुकामां।
दिल ही खोजि दिलै दिल भीतरि, इहां रांम रहिमांनां॥

---

१६. आंवन—जन्म। जानां=मरण। कड़छी=चम्मच। पसारा=सृष्टि। सूचे=पवित्र।

१७. नांईं=नाम पर। जोर=जुल्म। मसकीन=गरीब, बेचारा। तु जू=तो जो। मसीति=मसजिद। ग्यारसि=एकादशी। मुहरम=मोहर्रम। ग्यारह····समान=यदि एक रमजान का महीना ही धर्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जेती औरति मरदां कहिये, सब मैं रूप तुम्हारा ।
कबीर पंगुड़ा अलह रांम का, हरि गुर पीर हमारा ॥१७॥

तुम्ह घरि जाहु हमारी बहनां, विष लागैं तुम्हारे नैनां ॥
अंजन छाड़ि निरंजन राते, नां किसहीं का दैनां ।
बलि जाउं ताकी जिनि तुम्ह पठई, एक माइ एक बहनां ॥
राती खांडी पेखि कबीरा, देखि हमारा सिंगारौ ।
सर्ग लोक थैं हम चलि आई, करन कबीर भरतारौ ॥
सर्ग लोक मैं क्या दुख पड़िया, तुम आई कलि मांहीं ।
जाति जुलाहा नाम कबीरा, अजहूं पतीज्यो नांहीं ॥
तहां जाहु जहाँ पाटपटंबर, अगर चन्दन घसि लीनां ।
आइ हमारैं कहा करौगी, हम तो जाति कमीनां ॥
जिनि हम साजें साज्य निवाजे, बांधे काचै धागै ।
जे तुम्ह जतन करौ बहुतेरा, तौ पाणी आगि न लागै ॥

का महीना है, तो फिर अलग से ग्यारह महीने क्यों रचे, फिर तो एक ही मास होना चाहिए था । हेरा=देखा, समझा । पंगुड़ा=मूर्ख शिष्य ।

१८. बहनां=बहिन, मोहिनी माया से अभिप्राय है । अंजन=नाशवान् संसार । निरंजन=अक्षय पुरुष, माया से निर्लिप्त ईश्वर । एक माइ एक बहनां=तुम माँ और बहन के बराबर हो । राती खांडी=रक्त से रंगी तलवार, घातक मोहिनी डालनेवाली । पतीज्यौ नांहीं=विश्वास नहीं करती हो । जिनि···धागै=जिसने हमें रचा, और सब कुछ देकर हमें उपकृत किया, उसीके प्रेम के कच्चे धागे से हम बँधे हुए हैं, हम उसी मालिक के अनन्य सेवक हैं । पाहंण नीर न भीजै=पत्थर के अन्दर पानी नहीं पैठ सकता, मोहिनी माया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साहिब मेरा लेखा मांगै, लेखा क्यूं करि दीजै।
जे तुम्ह जतन करौ बहु तेरा, तो पाहंण नीर न भीजै॥
जाकी मैं मछी सो मेरा मछा, सो मेरा रखवालू।
टुक एक तुम्हारै हाथ लगाऊं, तौ राजा रांम रिसालू॥
जाति जुलाहा नाम कबीरा, वनि वनि फिरौं उदासी।
आसिपासि तुम्ह फिरि फिरि वैसौ, एक माउ एक मासी॥१८॥

तुम्ह बिन रांम कवन सौं कहिये, लागी चोट बहुत
दुख सहिये॥
बेध्यौ जीव विरह कै भालै, राति दिवस मेरे उर सालै।
को जानैं मेरे तन की पीरा, सतगुर सबद वहि गयौ
सरीरा॥
तुम्ह से बैद न हमसे रोगी, उपजी बिथा कैसे जीवै
वियोगी।
निस बासुरि मोहि चितवन जाई, अजहूँ न आइ मिले
रांमराई॥
कहत कबीर हमकौं दुख भारी, बिन दरसन क्यूं
जीवहि मुरारी॥१९॥

की दाल गलने की नहीं। उदासी=विरक्त। रिसालू=नाराज़ होंगे। वैसौ=बैठती हो। एक माउ एक मासी=तुम माँ और मौसी के बराबर हो।

१९. सालै=कसकता है, चुभता है। वहि गयौ=बेध गया, आरपार हो गया। वासुरि=वासर, दिन। चितवत जाई=राह देखने जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वै दिन कब आवैंगे माइ ।
जा कारनि हम देह धरी है, मिलिबौ अंग लगाइ ।।टेक।।
हौं जांनूं जे हिलमिलि खेलूं, तन मन प्रांन समाइ ।
या कामना करौ परपूरन, समरथ हौ रांमराइ ।।
मांहिं उदासी माधौ चाहै, चितवत रैन बिहाइ ।
सेज हमारी स्यंघ भई है, जब सोऊं तब खाइ ।।
यहु अरदास दास की सुनिये, तन की तपति बुझाइ ।
कहै कबीर मिलै जो सोई, मिलि करि मंगल गाइ ।।२०।।

वाल्हा आव हमारे ग्रेह रे, तुम्ह बिन दुखिया देह रे ।।टेक।।
सबको कहै तुम्हारी नारी, मोकौं इहै अंदेह रे ।
एकमेक ह्वै सेज न सोवै, तबलग कैसा नेह रे ।।
अंन न भावै नींद न आवे, ग्रिह बिन धरै न धीर रे ।
ज्यूं कामी को काम पियारा, ज्यूं प्यासे कूं नीर रे ।।
हैं कोई ऐसा पर-उपगारी, हरि सूं कहै सुनाइ रे ।
ऐसे हाल कबीर भये हैं, बिन देखें जीव जाइ रे ।।२१।।

राग भैरूँ

भलै नींदौ भलैं नींदौ, भलै नींदौ लोग ।
तन मन रांम पियारे जोग ।।टेक।।
मैं बौरी मेरे रांम भरतार, ता कारनि रचि करौं
स्यंगार ।।

---

२०. मांहिं=अन्तर में । स्यंघ=सिंह । अदरास=अर्ज़दास्त, विनती ।
२१. वाल्हा=प्यारे । अंदेह=अंदेशा, सन्देह । अंन=अन्न, भोजन ।
२२. भलै नींदौ=भले ही निंदा करें । ता कारनि=उसी स्वामी को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जैसैं धुबिया रज मल धोवै, हरत परत सब निंदक
खोवै ।
न्यंदक मेरे माई बाप, जन्म जन्म के काटे पाप ।।
न्यंदक मेरे प्रान अधार, बिन बेगारि चलावै भार ।
कहैं कबीर न्यंदक बलिहारी, आप रहै, जन पार उतारी ।।२२।।

क्या ह्वै तेरे न्हाई धोई, आतम राम न चीन्हां सोई ।।टेक।।
क्या घट ऊपरि मंजन कीयै, भीतरि मैल अपारा ।
राम नाम बिन नरक न छूटै, जे धोवै सौ बारा ।।
का नट भेष भगवां बस्तर, भसम लगावै लोई ।
ज्यूं दादुर सुरसुरीं जल भीतरि हरि बिन मुकति न होई ।।
परिहरि काम राम कहि बौरैं, सुनि सिख बन्धू मोरी ।
हरि कौ नांव अभै-पद-दाता, कहै कबीरा कोरी ।।२३।।

काहे कूं भीति बनाऊँ टाटी, का जानूं कहां परिहै माटी ।।टेक।।
काहे कूं मंदिर महल चिणांऊं, मूवां पीछै घड़ी एक
रहण न पाऊं ।

रिझाने के लिए । हरत परत = मैल के दाग व शिकन याने कपट । आप रहै, जन पार उतारी = पर-निंदा के पाप से खुद तो संसार-सागर में पड़ा रहता है, पर जिन हरिभक्तों की वह निंदा करता है उन्हें सहिष्णु बना-बनाकर पार उतार देता है ।

२३. भगवां बस्तर = संन्यासी का गेरुआ कपड़ा । सुरसुरी = सुरसरि, गंगा । दादुर = मेढ़क । काम = विषय-वासना । कोरी = जुलाहा ।

२४. टाटी = छप्पर । माटी = शरीर से अभिप्राय है । साढ़े···मेरा = मेरा असली घर यानी कब्र या मरघट तो साढ़े तीन हाथ ही लम्बा है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काहे कूं छाऊं ऊंच उसेरा, साढ़े तीनि हाथ घर मेरा ।।
कहै कबीर नर गरब न कीजै, जेता तन तेती भुंइ लीजै ।।२४।।

राग विलावल

राम भजै सो जानियै, जाकै आतुर नांहीं ।
सत संतोष लीयै रहै, धीरज मन मांहीं ।।टेक।।
जन कौं काम क्रोध ब्यापै नहीं, त्रिष्णा न जरावै ।
प्रफुलित आनन्द मैं रहै, गोब्यंद गुण गावै ।।
जन कौं परनिंद्या भावै नहीं, अरु असति न भाषै ।
काल कलपनां मेटि करि, चरनूं चित राषै ।।
जन समद्रिष्टि सीतल सदा, दुबिधा नहीं आनैं ।
कहै कबीर ता दास सूं, मेरा मन मानैं ।।२५।।

नहीं छांडौं बाबा राम नाम,
मोहिं और पढ़न सूं कौन काम ।।टेक।।
प्रहलाद पधारे पढ़न साल, संग सखा लीयें बहुत बाल ।
मोहि कहा पढ़ावै आल-जाल, मेरी पाटी में लिख दे श्रीगोपाल ।।
तब संना मुरकां कह्यो जाइ, प्रहिलाद बंधायौ बेगी आइ ।
तूं राम कहन की छाड़ि बानि, बेगि छुड़ाऊं मेरौ कह्यौ मानि ।।

---

२५. आतुर=अधीरता । सत=सत्य । जन कौ=हरिभक्त को । दुविधा= द्वैतभाव ।

२६. साल=पाठशाला । आल-जाल=झंझट-बखेड़ा । संना-मुरकां शंडा और मर्क, शुक्राचार्य के पुत्र जो असुरों के पुरोहित थे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मोहि कहा डरावै बारबार, जिनि जलथल गिरि कौ
कियो प्रहार।
बांधि मारि भावै देह जारि, जे हूं राम छाड़ौं तौ मेरे
गुरहि गारि॥
तब काढ़ि खड़ग कोप्यौ रिसाइ, तौहि राखनहारौ मोहि बताइ।
खंभा में तें प्रगट्यौ गिलारि, हरनाकस मार्‌यौं नख बेदारि॥
महापुरुष देवाधिदेव, नरस्यंघ प्रगट कियौ भगति भेव।
कहै कबीर कोई लहै न पार, प्रहिलाद उबार्‌यौ अनेक बार॥२६॥

राग सारंग

धंनि सो घरी महूरत्य दिंना।
जब ग्रिह आये हरि के जना॥टेक॥
दरसन देखत यहु फल भया, नैंना पटल दूरि ह्वै गया।
सब्द सुनत संसा सब छूटा, स्रवन कपाट बजर था तूटा॥
परसत घाट फेरि करि घड्या, लाया कर्म सकल झड़ि पड्या।
कहै कबीर संत भल भाया, सकल-सिरोमनि घट में पाया॥२७॥

लोका मति के भोरा रे।
जौ कासी तन तजे कबीरा, तौ रामहिं कहा निहोरा रे॥

बांनि = आदत। गिलारि = सिंह से आशय है। नख बिदारि = नखों से चीरकर। भेव = भेद, रहस्य।

२७. महूरत्य = मुहुर्त्त। पटल = अज्ञान का परदा। बजर = वज्र। परसत घड्या = हाथ लगाकर मिट्टी के शरीर को कंचन का बना दिया।

२८. निहोरा = एहसान। लाहा = लाभ। पैसि = पैठकर, मिलकर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तब हम वैसे अब हम ऐसे, इहै जनम का लाहा।
ज्यूं जल मैं जल पैसि न निकसै, यूं ढुरि मिल्या जुलाहा ।।
राम-भगति परि जाकौ हित चित, ताकौ अचरज काहा।
गुरप्रसाद साध की संगति, जग जीते जाइ जुलाहा ।।
कहै कबीर सुनहु रे सन्तो, भरमि परै जिनि कोई।
जस कासी तस मगहर ऊसर, रिदै राम सति होई ।।२८।।

अब मोहि जलत राम जल पाइया।
राम उदक तन जलत बुझाइया ।।
मन मारन कारन बन जाइयै।
सो जल बिन भगवंत न पाइयै।
जेहि पावक सुर नर हैं जारे।
राम उदक जन जलत उबारे ।।
भवसागर सुखसागर मांहीं।
पीव रहे जल निखुटत नाहीं।
कहि कबीर भजु सारिंगपानी।
राम उदक मेरी तिषा बुझानी ।।२९।।

क्या जप क्या तप क्या ब्रत पूजा। जाके रिदै भाव है दूजा।
रे जन, मन माधव स्यों लाइयै। चतुराई न चतुर्भुज पाइयै ।।
परिहरि लोभ अरु लोकाचार। परिहरि काम क्रोध अहंकार।

मगहर=एक स्थान जो वस्ती जिले में है। मगहर को मगध का भी अपभ्रंश माना जाता है। ऊसर=यहां निष्फल से अभिप्राय है।

२९. उदक=जल। मन मारन=मन को जीतने। निखुटत नाहीं=घटता नहीं है। सारिंगपानी=धनुर्धारी राम। तिषा=प्यास।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर्म करत बद्धे अहमेव । मिल पाथर कौं करहौं सेव ।।
कहि कबीर भगति कर पाया । भोले भाइ मिले रघुराया ।।३०।।

गंगा के संग सलिता बिगरी । सो सलिता गंगा होइ निबरी ।
बिगर्‌यो कबीरा राम दुहाई । साचु भयो अन कतहिं न जाई।।
चन्दन कै संगि तरवर बिगर्‌यो । सो तरवर चन्दन ह्वै
निबर्‌यो ।।
पारस के संग तांबा बिगर्‌यो । सो तांबा कंचन ह्वै
निबर्‌यो ।।३१।।

पाती तोरै मालिनी, पाती-पाती जीउ ।
जिसु पाहन को पाती तोरै, सो पाहनु निरजीउ ।।
भूली मालिनी है एउ । सतिगुरु जागता है देउ ।।
ब्रह्म पाती बिस्नु डारी फूल संकर देव ।
तीन देव प्रतख्य तोरहिं करहि किसकी सेव ।।
पषान गढिकै मूरति कीनी देकै छाती पाउ ।
जे एइ मूरति साची है तो गड़णहारे को खाउ ।।

---

३०. रिदै=हृदय । चतुराई=पांडित्य । बद्धे=बंधन में पड़े । भाइ=भाव ।

३१. सलिता=सरिता, नदी । बिगरी=संगति में अपना रूप खो दिया । निबरी=परिणत हो गई । अन कतहि=कहीं दूसरी जगह ।

३२. पाहन=पत्थर की मूर्ति । जागता=सजीव । देउ=देव । प्रतख्य=प्रत्यक्ष । सेव=सेवा-पूजा । देकै=रखकर । गड़णहारा=गढ़ने-वाला, शिल्पी । पहिति=दाल । फरकरा=खरा, अच्छा भुना हुआ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भातु पहिति और लापसी करकरा कासारु ।
भोगनुहारे भोगिया इसु मूरति के मुख छारु ॥
मालिन भूली जग भुलाना, हम भुलाने नाहिं ।
कहि कबीर हम राम राखे कृपाकरि हरिराइ ॥३२॥

संतन जात न पूछो निरगुनियाँ ।
साध ब्राह्मन, साध छत्तरी, साधै जाती बनियाँ ॥
साधन माँ छत्तीस कौंम हैं, टेढ़ी तोर पुछनियाँ ।
साधै नाऊ, साधै धोबी, साध जाति हैं बरियाँ ॥
साधन माँ रैदास सन्त है, सुपच रिषी सो भँगियाँ ।
हिन्दू-तुर्क दुइ दीन बने हैं, कछू नहीं पहचनियाँ ॥३३॥

निसदिन खेलत रही सखियन संग, मोहि बड़ा डर लागै ।
मोरे साहब की ऊँची अटरिया, चढ़त में जियरा काँपै ॥
जो सुख चहै तो लज्जा त्यागै, पिया सूं हिलमिल लागै ।
घूंघट खोल अंगभर भेंटै, नैन आरती साजै ॥
कहै कबीर सुनो सखि मोरी, प्रेम होय सो जानै ।
निज प्रीतम की आस नहीं हैं, नाहक काजर पारै ॥३४॥

कासारु=कसार, एक प्रकार का पकवान । भगोंनुहारे भोगिया= पुजारी खा गये ।

३३. पुछनियाँ=पूछना, प्रश्न । बरियाँ=वारी, एक जाति जो पत्ते-दोने बनाने और सेवा का काम करती है । सुपच रिषी=सुदर्शन नामक श्वपच ऋषि से अभिप्राय है, जिनका उल्लेख महाभारत में आया है ।

३४. अंग=अंक, छाती । काजर पारै=दीपक के धुयें की कालिख को किसी बर्तन में जमाये; व्यर्थ सोहाग दिखाये ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घर घर दीपक बरै, लखै नहिं अन्ध है।
लखत-लखत लखि परै, कटै जम-फंद है॥
कहन-सुनन कछु नाहिं, नहीं कछु करन है।
जीते-जी मरि रहै, बहुरि नहिं मरन है॥
जोगी बड़े बियोग कहैं घर दूर है।
पासहि बसत हजूर, तू चढ़त खजूर है॥
बाह्मन दिच्छा देत, सो घर-घर घालिहै।
मूर सजीवन पास, तू पाहन पालिहै॥
ऐसन साहब कबीर, सलोना आप है।
नहीं जोग नहिं जाप, पुन्न नहिं पाप है॥३५॥

मन मस्त हुआ तब क्यों बोले॥
हीरा पायो गाँठ गँठियायो, बारबार वाको क्यों खोले।
हलकी थी तब चढ़ी तराजू, पूरी भई तब क्यों तोले।
सुरत कलारी भई मतवारी, मदवा पी गई बिन तोले॥
हंसा पाये मानसरोवर, ताल तलैयाँ क्यों डोले।
तेरा साहब है घर माहीं, बाहर नैना क्यों खोले।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, साहब मिल गये तिल-ओले॥३६॥

जाग पियारी अब का सोवै। रैन गई काहेकों खोवै॥
जिन जागा तिन मानिक पाया। तैं बौरी सब सोय गँवाया॥

---

३५. दीपक=आत्मज्योति से आशय है। पाहन पालिहै=पत्थर की मूर्तियों को पूजता है। सलौना=सुन्दर।

३६. सुरत कलारी=ध्यान, लौरूपी कलवारी। तिल-ओले=आँख के तिल की ओट में।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पिय तेरे चतुर तू मूरख नारी। कबहुँ न पिय की सेज सँवारी॥
तैं बौरी बौरापन कीन्हा। भर-जोवन पिय अपन न चीन्हा॥
जाग देख पिय सेज न तेरे। तोहि छाँड़ि उठि गये सवेरे॥
कहै कबीर सोई धन जागै। सब्द-बान उर-अन्तर लागै॥३७॥

सन्तो, सहज समाधि भली।
साँई तें मिलन भयो जा दिन तें, सुरत न अन्त चली॥
आँख न मूँदूँ कान न रूँधूँ, काया कष्ट न धारूँ।
खुले नैन में हँस हँस देखूँ, सुन्दर रूप निहारूँ॥
कहूँ सो नाम, सुणूँ सो सुमिरन, जो कुछ करूँ सो पूजा।
गिरह-उद्यान एक सम देखूँ, भाव मिटाऊँ दूजा॥
जहँ जहँ जाऊँ सोई परिकरमा, जो कछु करूँ सो सेवा।
जब सोऊँ तब करूँ दण्डवत, पूजूँ और न देवा॥
सब्द निरन्तर मनुआ राता, मलिन बचन को त्यागी।
ऊठत-बैठत कबहुँ न बिसरै, ऐसी तारी लागी॥
कहै कबीर यह उन्मुनि रहनी, सो परगट कर गाई।
सुख-दुख के इक परे परमसुख तेहि में रहा समाई॥३८॥

---

३७. मानिक=लाल रंग का एक रत्न; यहाँ प्रियतम से आशय है। धन=स्त्री।

३८. अन्त=अनत, अन्यत्र। रूँधूँ=बन्द करता हूँ। कहूँ सो नाम=जो कुछ बोलता हूँ, वही नाम-जप हो जाता है। गिरह-उद्यान=घर और वन। भाव दूजा=द्वैतभाव। परिकरमा=परिक्रमा, प्रदक्षिणा। जब सोऊँ....दण्डवत्=पैर फैलाकर सो जाना ही मेरा दण्डवत् प्रणाम है। तारी=समाधि, ध्यान। सुख-दुख=सांसारिक सुख-दुःख। परमसुख=ब्रह्मसुख।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जब मैं भूला रे भाई, मेरे सतगुरु जुगत लखाई।
किरिया-करम-अचार मैं छाँडा, छाँडा तीरथ का न्हाना।
सगरी दुनिया भई सयानी, मैं ही एक बौराना।
ना मैं जानूँ सेवा बंदगी, ना मैं घंट बजाई।
ना मैं मूरत धरि सिंघासन, ना मैं पुहुप चढ़ाई।
ना हरि रीझें जप तप कीन्हे, ना काया के जारे।
ना हरि रीझैं धोती छाँड़े, ना पाँचों के मारे।
दाया राखि धरम को पालै, जगसूँ रहै उदासी।
अपना-सा जिव सबका जानै, ताहि मिलै अविनासी।
सहै कुसब्द बाद को त्यागै, छाँडै गर्व-गुमाना।
सत्तनाम ताही को मिलिहै, कहैं कबीर दीवाना ॥३९॥

जो खोदाय मसजीद बसतु है, और मुलुक केहिकेरा।
तीरथ-मूरत राम-निवासी, बाहर केहिका डेरा।
पूरब दिसा हरी को बासा, पच्छिम अलह मुकामा।
दिल में खोज दिलहिमें खोजौ, इहैं करीमा रामा।
जेते औरत-मरद उपानी, सो सब रूप तुम्हारा।
कबीर पोंगड़ा अलह-राम का, सो गुरु पीर हमारा ॥४०॥

---

३९. जुगत=योग-युक्ति। अचार=आचार। धोती छाँड़े=धोती उतारकर लँगोटी लगाने से। पाँचों के मारे=पाँचों ज्ञानेन्द्रियों को वश में करने से। उदासी=अनासक्त।

४०. डेरा=निवासा। करीमा=कृपालु, परमेश्वर। उपानी=उत्पन्न हुए। पोंगड़ा=मूर्ख, चेला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पांडे, बूझि पियहु तुम पानी ।
जिहि मटिया के घरमहँ बैठे, तामहँ सिस्टि समानी ।
छपन कोटि यादव जहँ सीजे, मुनिजन सहस अठासी ।।
पैग पैग पैगम्बर गाड़े, सो सब सरि भौ माटी ।
तेहि मटिया के भाँड़े पाँड़े, बूझि पियहु तुम पानी ।।
कच्छ-मच्छ-घरियार बियाने, रुधिर नीर जल भरिया ।
नदिया नीर नरक बहि आवै, पसु-मानुस सब सरिया ।।
हाड़ झरी-झरि गूद गरी-गरि, दूध कहाँते आया ।
सो लै पाँड़े जेवन बैठे, मटियहिं छूति लगाया ।।
बेद-कितेब छाँड़ि देउ पाँड़े, ई सब मन के भरमा ।
कहहिं कबीर सुनहु हो पाँड़े, ई तुम्हरे हैं करमा ।।४१।।

दुलहिन, अँगिया काहे न धोवाई ।
बालपने की मैली अँगिया, विषय दाग परि जाई ।।
बिन धोये पिय रीझत नाहीं, सेज ते देत गिराई ।
सुमिरन ध्यान कै साबुन करिले, सत्तनाम-दरियाई ।।
दुविधा के भेद खोल बहुरिया, मन कै मैल धोवाई ।
चेत करो तीनों पन बीते, अब तो गवन नगिचाई ।।

---

४१. सिस्टि = सृष्टि । सीजे = गल गये । पैग पैग = पग-पग पर । बूझि= जाति पूछकर । बियाने = पैदा हुए । नरक = मल-मूत्र । सरिया = सड़ गये । झरि-झरि = झर-झरकर । गूद = गूदा, हड्डी के भीतर का भेजा । गरी-गरि = गल-गलकर ।

४२. अँगिया = चोली; यहाँ मन की मलिन वृत्ति या वासना से आशय है । गवन नगिचाई = गौना अर्थात् मरण समीप आ गया है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पालनहार द्वार हैं ठाड़े, अब काहे पछिताई ।
कहत कबीर सुनो री बहुरिया, चित अंजन दे आई ।।४२।।

वै क्यूं कासी तजैं मुरारी । तेरी सेवा-चोर भये बनवारी ।।
जोगी जती तपी संन्यासी । मठ-देवल बसि परसैं कासी ।।
तीन बार जे नितप्रति न्हावैं । काया भीतरि खबरि न पावैं ।।
देवल देवल फेरी देहीं । नाम निरंजन कबहुँ न लेहीं ।।
तरन-बिरद कासी कों न दैहूँ । कहै कबीर मल नरकहिं जैहूँ ।।४३।।

करो जतन सखी साँई-मिलन की ।
गुड़िया गुड़वा सूप सुपलिया, तजि दे बुधि लरिकैयाँ खेलन की ।।
देवता पित्तर भुइयाँ भवानी, यह मारग चौरासी चलन की ।
ऊँचा महल अजब रँग बंगला, साईं की सेज वहाँ लागी फूलन की ।।
तन मन धन सब अर्पन कर वहाँ, सुरत सम्हार परूँ पइयाँ
सजन की ।
कहै कबीर निर्भय होय हंसा, कुंजी बताद्यों ताला-खुलन
की ।।४४।।

बहुरिया=बहू, वधू ।

४३. बनवारी=वनमाली, विष्णु का एक नाम । काया···पावै=पता नहीं कि शरीर के भीतर कितना मल-मूत्र भरा है । फेरी=परिक्रमा । तरन-बिरद=संसार से मुक्त होने का यश ।

४४. गुड़िया···सुपलिया=लड़कियों के खेलने के खिलौने । बुधि=बुद्धि, स्वभाव । चौरासी चलन की=चौरासी लाख योनियों में जन्म लेने की । अजब रँग=अद्भुत शोभा । सजन=स्वामी । हंसा=मुक्त जीवात्मा से अभिप्राय है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पीले प्याला हो मतवाला, प्याला नाम-अमीरस का रे।
बालापन सब खेलि गँवाया, तरुन भया नारी-बस का रे॥
विरध भया कफ बायने घेरा, खाट पड़ा न जाय खसका रे।
नाभि-कँवल बिच है कस्तूरी, जैसे मिरग फिरे बन का रे॥
बिन सतगुरु इतना दुख पाया, वैद मिला नहिं इस तनका रे।
मात-पिता बन्धू सुत तिरिया, संग नहिं कोई जाय सका रे॥
जबलग जीवै गुरु गुन लेगा, धन-जोबन है दिन दस का रे।
चौरासी जो उबरा चाहे, छोड़ कामिनी का चसका रे॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, नखसिख पूर रहा बिस का रे॥४५॥

तोको पीव मिलैंगे घूँघट के पट खोल रे।
घट-घट में वही साईं रमता, कटुक बचन मत बोल रे॥
धन जोबन का गरब न कीजै, झूठा पंचरंग चोल रे।
सुन्न महल में दियना बार ले, आसन सों मत डोल रे॥
जोग जुगत सों रंग महल में, पिय पायो अनमोल रे।
कहै कबीर आनन्द भयो है, बाजत अनहद ढोल रे॥४६॥

साहेब है रंगरेज चुनरी मेरी रंग डारी।
स्याही रंग छुड़ायके रे, दियो मजीठा रंग।
धोये से छूटे नहीं रे, दिन दिन होत सुरंग॥

---

४५. वाय = वायु। गुरु गुन लेगा = परमात्मा लगान या, कर्मों का लेखा लेगा।

४६. पंचरंग चोल=पंचतत्त्व का रचा शरीर।

४७. मजीठा=एक लता, जिसकी सूखी जड़ और डंठलों को उबालकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाव के कुण्ड नेह के जल में, प्रेम-रंग दई बोर।
दुख देइ मैल छुटाय दियो रे, खूब रँगी झकझोर॥
साहिब ने चुनरी रंगी रे, पीतम चतुर सुजान।
सब कुछ उन पर वार दूँ रे, तन मन धन औ प्रान॥
कहैं कबीर रँगरेज पियारे मुझपर हुए दयाल।
सीतल चुनरी ओढ़िके रे, भई हौं मगन निहाल॥४७॥

अरे, इन दोहुन राह न पाई॥
हिन्दू अपनी करै बड़ाई, गागर छुवन न देई।
बेस्या के पायन तर सोवै, यह देखो हिन्दुआई॥
मुसलमान के पीर औलिया मुर्गी मुगी खाई।
खाला केरी बेटी ब्याहै, घरहिं में करै सगाई॥
बाहर से इक मुर्दा लाये धोय-धाय चढ़वाई।
सब सखियाँ मिलि जेमन बैठीं, घर भर करै बड़ाई॥
हिन्दुन की हिन्दुवाई देखी, तुरकन की तुरकाई।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, कौन राह ह्वै जाई॥४८॥

यह जग अंधा मैं केहि समुझावों॥
इक-दुइ होंय उन्हैं समुझावौं, सब ही भुलाना पेट के धंधा।

पक्का लाल रंग तैयार किया जाता है। सुरंग=लाल; अनुरागमय। सीतल=शान्ति देनेवाली, ताप दूर करनेवाली।

४८. खाला केरी=मौसी की। मुर्दा=हलाल किया हुआ जानवर। चढ़वाई=देगची में पकाया।

४९. पानी का घोड़ा=क्षणभंगुर देह से आशय है। पवन असवरवा=

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पानीके घोड़ा पवन असवरवा, ढरकिपरै जस ओसके
बुंदा ।।
गहिरी नदिया अगम बहै धरवा; खेवनहारा पड़िगा फंदा ।
घर की वस्तु निकट नहीं आवत दियना बारिके ढूँढ़त अंधा ।।
लागी आग सकल बन जरिगा, बिन गुरुग्यान भटकिया बंदा ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, एकदिन जाय लंगोटी झार
बंदा ।।४९।।

मोको कहाँ ढूँढ़ो बन्दे, मैं तो तेरे पास में ।
ना मैं बकरी ना मैं भेड़ी, ना मैं छुरी गँड़ास में ।।
नहीं खाल में नहीं पोंछ में, ना हड्डी ना माँस में ।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में ।।
ना तो कौनो क्रिया-करम में, नहीं जोग-बैराग में ।
खोजी होय तौ तुरतै मिलिहौं पलभर की तालास में ।।
मैं तो रहौं सहर के बाहर, मेरी पुरी मवास में ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सब साँसों की साँस में ।।५०।।

जेहि कुल भगत भाग बड़ होई ।
अबरन बरन न गनिय रंक धनि, बिमल बास निज सोई ।।

प्राण-वायु से आशय है । धरवा=धार । बंदा=सेवक, जीव ।

५०. गँडास=गंडासा, घास के टुकड़े करने का हथियार । खोजी=सत्य-शोधक । मवास=दुर्गम गढ़ ; अन्तरात्मा से आशय है । सहर के बाहर=पांचभौतिक सृष्टि से परे ।

५१. लोई=लोग । पुरइन=कमल का पत्ता, जो जल में रहते हुए भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाम्हन छत्री बैस सूद्र सब भगत समान न कोई।
धन वह गाँव ठाँव असथाना, ह्वै पुनीत सँग लोई॥
होत पुनीत जपै सतनामा, आपु तरै तारै कुल दोई।
जैसे पुरइन रह जल भीतर, कह कबीर जग में जन सोई॥५१॥

पंडित वाद बदौ सो झूठा।
राम के कहे जगत गति पावै, खाँड कहे मुख मीठा॥
पावक कहे पाँव जो दाझैं, जल कहे तृषा बुझाई।
भोजन कहै भूख जो भागै, तो दुनियां तरि जाई॥
नर के संग सुवा हरि बोलै, हरि प्रताप नहीं जानै।
जो कबहूँ उड़ि जाय जंगल को, तौ हरि-सुरति न आनै॥
बिनु देखे बिनु अरस परस बिनु, नाम लिये का होई।
धन के कहे धनिक जो होतो, निरधन रहत न कोई॥
साँची प्रीति विषय-माया सों, हरि-भगतन की हाँसी।
कह कबीर एक राम भजे बिन बाँधे जमपुर जासी॥५२॥

मेरा तेरा मनुआं कैसे इक होइ रे।
मैं कहता हौं आँखिन देखी, तू कागद की लेखी रे।
मैं कहता सुरझावनहारी, तू राख्यो अरुझाइ रे॥
मैं कहता तू जागत रहियो, तू रहता है सोइ रे।
मैं कहता निर्मोही रहियो, तू जाता हैं मोहि रे॥

जल से अलिप्त रहता है। जन सोई=वही सच्चा भक्त है।
५२. गति=मोक्ष। दाझैं=जले। अरस=मिलन। हाँसी=मज़ाक, अपमान। जासी=जाओगे।
५३. विहंडी=नाश करनेवाली। वाहैं=बहती है। वैसा होइरे=अरे, तभी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जुगन-जुगन समझावत हारा, कहा न मानत कोइ रे।
तू तो रंडी फिरै बिहंडी, सब धन डार्‌या खोइ रे॥
सतगुरु-धारा निरमल बाहै, वा मे काया धोइ रे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तबही वैसा होइ रे॥५३॥

नैहर में दाग लगाय आई चुनरी।
ए रंगरेजवा कै मरम न जानै,
नहिं मिलै धोबिया कवन करै उजरी॥
तन कै कूँडी ग्यान कै सउँदन,
साबुन महँग बिकाय या नगरी॥
पहिरि ओढ़िकै चली सुसरिया,
गौवाँ के लोग कहैं बड़ी फुहरी॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
बिना सतगुरु कबहूँ नहिं सुधरी॥५४॥

कौन ठगवा नगरिया लूटल हो।
चंदन-काठ कै बनल खटोलना, ता पर दुलहिन सूतल हो॥
उठो सखी मोरी माँग सँवारो, दुलहा मोसे रूसल हो।
आये जमराज पलंग चढ़ि बैठे, नैनन आँसू टूटल हो॥

तू सद्‌गुरु के समान निर्मल होगा।

५४. कूँडी=छोटी नाँद। सऊँदन=रेह मिला पानी, जिसमें धोने से पहले धोवी कपड़ों को भिगोता है। फुहरी=फूहड़, गँवार।

५५. नगरिया=नगरी, देह से आशय है। दुलहिन=जीव। सूतल=सोगई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चारि जने मिलि खाट उठाइन, चहुँ दिसि धू धू ऊठल हो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जग से नाता छूटल हो ॥५५॥

रमैया कै दुलहिन लूटा बाजार।
सुरपुर लूट नागपुर लूटा, तीन लोक मचा हाहाकार ॥
ब्रह्मा लूट महादेव लूटे, नारद मुनि कै परी पिछार।
सिंगी की मिंगी करि डारी, पारासर कै उदर बिदार ॥
कनफूँका चिदकासी लूटे, लूटे जोगेसर करत विचार।
हम तो बचिगे साहब-दया से, सब्द-डार गहि उतरे पार ॥५६॥

रूसल=रूठ गया। टूटल=निकल पड़े। धू धू=आग के दहकने का शब्द।

५६. रमैया कै दुलहिन=मापा से अभिप्राय है। सिंगी=शृंगी ऋषि ॥ मिंगी=गिरी, चूर-चूर। चिदकासी—आकाश के समान निर्लिप्त चेतन रूप।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: ३ :

साखी

गुरुदेव कौ अंग

सतगुरु लई कमांण करि, बाहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ, भीतर रह्या सरीर ॥१॥

दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहुँणां, बहुरि न आवौं हट्ट ॥२॥

गुरु गोबिंद तौ एक है, दूजा यहु आकार।
आप मेट जीवत मरै, तौ पावै करतार ॥३॥

पासा पकड्या प्रेम का, सारी किया सरीर।
सतगुरु दाव बताइया, खेलै दास कबीर ॥४॥

गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोबिन्द दियो बताय ॥५॥

कबिरा ते नर अंध हैं, गुरु को कहते और।
हरि रूठै गुरु ठौर हैं, गुरु रूठै नहिं ठौर ॥६॥

गुरुदेव कौ अंग

१. कमांण=धनुष। बाहण लागा, चलाने लगा।

२. अघट्ट=जो कभी न घटे, अक्षय। बिसाहुणां=सौदा लाना। हट्ट=हाट, पेठ।

३. आप मेट जीवत मरे= अहंभाव को नष्टकर देहभाव को भूल जाय।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह तन विष की बेलरी, गुरु अंमृत की खान ।
सीस दिये जो गुरु मिले, तौ भी सस्ता जान ।।७।।

सुमिरण कौ अंग

मेरा मन सुमिरै राम कूँ, मेरा मन रामहिं आहि ।
अब मन रामहिं ह्वै रह्या, सीस नवावौं काहि ।।१।।

जिहि हरि जैसा जाणियाँ, तिनकूँ तैसा लाभ ।
ओसों प्यास न भाजई, जबलग धसै न आभ ।।२।।

राम पियारा छांड़िकरि, करै आन का जाप ।
बेस्वा केरा पूत ज्यूँ, कहै कौन सूँ बाप ।।३।।

सुमिरन सुरत लगाइके मुख तें कछू न बोल ।
बाहर के पट देइके अन्तर के पट खोल ।।४।।

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर ।
कर का मनका डारिदे, मन का मनका फेर ।।५।।

---

७. वेलरी=लता ।

सुमिरण कौ अंग

१. रामहिं आहि=राम के ही लिए है ।

२. आभ=आव, पानी

३. वेस्वा=वेश्या ।

४. बाहर···खोल=विषयों के लिए इन्द्रियों के द्वार बंद करदे और अंतर के किवाड़ं स्वरूप-दर्शन के लिए खोलदे ।

५. फेर=(१)भेद, द्वैतभाव (२) माला जपना । मनका=गुरिया, सुमिरनी का दाना ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहिं।
मनुवां तो दहुँदिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं ॥६॥

तूँ तूँ करता तूँ भया, मुझमें रही न हूँ।
वारी तेरे नाम पर, जित देखूँ तित तूँ ॥७॥

बिरह कौ अंग

अंदेसड़ा न भाजिसी, संदेसौ कहियां।
कै हरि आयां भाजिसी, कै हरि ही पासि गयां ॥१॥

जवहूँ मार्‌या खैंचिकरि, तब मैं पाई जाणि।
लागी चोट मरम्म की, गई कलेजा छाणि ॥२॥

जिहि सरि मारी काल्हि, सो सर मेरे मन बस्या।
तिहि सरि अजहूँ मारि, सर बिन सचु पाऊँ नहीं ॥३॥

बिरह-भुवंगम तन बसै, मन्त्र न लागै कोइ।
राम-बिवोगी ना जिवै, जिवै त बौरा होइ ॥४॥

सब रग तंत रबाब तन, बिरह बजावै नित्त।
और न कोई सुणि सकै, कै सांईं कै चित्त ॥५॥

---

६. दहुँ=दसों
७. वारी=वलिहारी।

बिरह कौ अंग

१. अंदेसड़ा न भाजिसी=अंदेशा नहीं जायगा।
२. गई छांड़ि=भेदकर पार कर गई।
३. सर=सद्‌गुरु के शब्द-वाण से आशय है। सचु=चैन।
४. बिवोगी=वियोगी।
५. तंत=तार। रबाव=एक प्रकार का वाजा, इसरार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अंषड़ियाँ झांई पड़ी, पंथ निहारि-निहारि ।
जीभड़ियाँ छाला पड्या, राम पुकारि-पुकारि ॥६॥
इस तन का दीवा करौं, बाती मेल्यूं जीव ।
लोही सींचौं तेल ज्यूँ, कब मुख देखौं पीव ॥७॥
जौ रोऊँ तौ बल घटै, हँसौं तौ राम रिसाइ ।
मनहीं माहिं बिसूरणां, ज्यूँ घुण काठहि खाइ ॥८॥
कै बिरहनि कूँ मीच दै, कै आपहिं दिखलाइ ।
आठ पहर का दाझणां, मोपै सह्या न जाइ ॥९॥
बिरहिन ओदी लाकड़ी, सपचै औ धुँधुआय ।
छूट पड़ौं या बिरह से, जो सगरो जरि जाय ॥१०॥
हिरदे भीतर दव बलै, धुआँ न परगट होय ।
जाके लागी सो लखै, की जिन लागी सोय ॥११॥
कबिरा बैद बुलाइया, पकरिके देखी बाहिं ।
बैद न वेदन जानई, करक कलेजे माहिं ॥१२॥

रस कौ अंग

कबीर हरि-रस यौं पिया, बाकी रही न थाकि ।
पाका कलस कुँभार का, बहुरि न चढ़ई चाकि ॥१॥

---

६. झाँई=अँधेरा ।
८. बिसूरणां=मन में दुःख मानना, चिंता करना ।
९. दाझणां=जलना ।
१०. ओदी=गीली । सपचै=सुलगे ।
११. दव=आग । लागी=(१) लगी है (२) लगाई है ।
१२. वेदन=वेदना, पीड़ा । करक=कसक, दर्द ।

रस कौ अंग

१. थाकि=अतृप्ति, भूख ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कबीर भाठी कलाल की, बहुतक बैठे आइ।
सिर सौंपै सोई पिवै, नहीं तो पिया न जाइ ॥२॥

सबै रसाइण मैं किया, हरि सा और न कोइ।
तिल इक घट मैं संचरै, तौ सब तन कंचन होइ ॥३॥

निहकर्मी पतिव्रता कौ अंग

कबीर प्रीतड़ी तौ तुझसौं, बहु गुणियाले कंत।
जे हँसि बोलौं और सौं, तौं नील रँगाऊँ दंत ॥१॥

नैनां अंतरि आव तूँ, ज्यूँ हौं नैन झँपेउँ।
ना हौं देखौं औरकूँ, ना तुझ देखन देउँ ॥२॥

कबीर रेख स्यंदूर की, काजल दिया न जाइ।
नैनूँ रमइया रमि रह्या, दूजा कहाँ समाइ ॥३॥

उस संम्रथ का दास हौं, कदे न होइ अकाज।
पतिव्रता नांगी रहै, तौं उसही पुरिस कौं लाज ॥४॥

पतिबरता मैली भली, काली कुचिल कुरूप।
पतिबरता के रूप पर, वारौं कोटि सरूप ॥५॥

पतिबरता पति कों भजै, और न आन सुहाय।
सिंह बचा जो लंघना, तौभी घास न खाय ॥६॥

निहकर्मी पतिव्रता कौ अंग

१. नील रँगाऊँ दंत = मुहँ काला करूँ, अपने-आपको कलंक लगाऊँ।
२. झँपेउँ = मंद लूँ।
४. पुरिस = पुरुष, स्वामी।
५. कुचिल = मैले वस्त्रवाली।
६. बचा = बच्चा। लंघना = भूखा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पतिवरता मैली भली, गले कांच की पोत।
सब सखियन में यों दिपै, ज्यों रवि-ससि की जोत ।।७।।

चितावणी कौ अंग

कबीर नौबति आपणीं, दिन दस लेहु बजाइ।
ए पुर पट्टन ए गलीं, बहुरि न देखन आइ ।।१।।

सातों सबद जु बाजते, घरि-घरि होते राग।
ते मंदिर खाली पड़े, बैसण लागे काग ।।२।।

कबीर कहा गरबियौ, चाम लपेटे हड्ड।
हैवर ऊपरि छत्र सिरि, तो भी देवा खड्ड ।।३।।

आजि कि काल्हि कि पाँच दिन, जंगल होइगा बास।
ऊपरि ऊपरि फिरहिंगे, ढोर चरन्दे घास ।।४।।

इहि औसरि चेत्या नहीं, पसु ज्यूँ पाली देह।
रामनाम जाण्या नहीं, अन्ति पड़ी मुख खेह ।।५।।

मनिषा जनम दुर्लभ है, देह न बारम्बार।
तरवर थैं फल झड़ि पड्या, बहुरि न लागै डार ।।६।।

कबीर यहु तन जात है, सकै तौं ठाहर लाइ।
कै सेवा करि साध की, कै गोविन्द-गुण गाइ ।।७।।

चितावणी कौ अंग

२. सातों सबद = सातों स्वर। बैसण लागे = बैठने लगे।
३. हैवर = बढ़िया घोड़ा। खड्ड = क़ब्र से मतलब है।
५. खेह = धूल।
७. ठाहर लाइ = अच्छे ठौर पर लगादे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खंभा एक गइंद दोइ, क्यूँ करि बंधसि वारि।
मानि करै तौ पीव नहीं, पीव तौ मानि निवारि ॥८॥

ऊजल कपड़ा पहरिकरि, पान सुपारी खाहिं।
एकै हरि का नांव बिन, बाँधे जमपुरि जाहिं ॥९॥

मैं मैं मेरी जिनि करैं, मेरी मूल बिनास।
मेरी पग का पैंषड़ा, मेरी गल की पास ॥१०॥

कबीर नांव जरजरी, कूड़े खेवणहार।
हलके-हलके तिरि गये, बूड़े जिनि सिर भार ॥११॥

पानी केरा बुदबुदा, अस मानुष की जात।
देखत ही छिप जायगा, ज्यों तारा परभात ॥१२॥

आछे दिन पाछे गये, गुरु से किया न हेत।
अब पछतावा क्या करैं, चिड़ियाँ चुग गईं खेत ॥१३॥

माटी कहै कुम्हार को, तूं क्या रूँदै मोहिं।
इक दिन ऐसा होयगा, मैं रूँदूँगी तोहिं ॥१४॥

आये हैं सो जायँगे, राजा रंक फकीर।
इक सिंघासन चढ़ि चले, इक बँधि जात जँजीर ॥१५॥

---

८. मानि=मान, अहंभाव।

१०. मेरी मूल बिनास=ममता विनाश का मूल है। पैषड़ा=पैरों की बेड़ी। पास=फाँसी।

११. कूड़े=अनाड़ी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मैं, भँवरा तोहिं बरजिया, वन-बन बास न लेइ।
अटकैगा कहुँ बेल से, तड़पि-तड़पि जिय देइ ॥१६॥

इक दिन ऐसा होयगा, कोउ काहू का नाहिं।
घर की नारी को कहै, तन की नारी जाहिं ॥१७॥

चलती चक्की देखिके, दिया कबीरा रोय।
दुइ पट भीतर आइके, साबित गया न कोय ॥१८॥

माली आवत देखिके कलियाँ करैं पुकार।
फूली-फूली चुनि लईं, काल्हि हमारी बार ॥१९॥

कबिरा रसरी पाँव में, कह सोवै सुख चैन।
स्वाँस-नगाड़ा कूँच का बाजत है दिन रैन ॥२०॥

दस द्वारे का पींजरा, ता में पंछी पौन।
रहिबे को है आचरज, जाइ तो अचरज कौन ॥२१॥

मन कौ अंग

हिरदै भीतरि आरसी, मुख देषणां न जाइ।
मुख तौ तौपरि देखिए, जे मन की दुबिधा जाइ ॥१॥

मैमंता मन मारि रे, घटहीं मांहै घेरि।
जबही चालै पीठि दे, अंकुस दे-दे फेरि ॥२॥

---

१६. बरजिया=मना किया। बेल=काम-वासना से तात्पर्य है।
१७. नारी=(१) स्त्री (२) नाड़ी।
२१. पंछी पौन=प्राणरूपी पक्षी।

मन कौ अंग

१. आरसी=दर्पण।
२. मैमंता=मतवाला (हाथी)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनह मनोरथ छाड़िदे, तेरा किया न होइ।
पाणी मैं घीव नोकसै, तौ रूखा खाइ न कोइ ॥३॥

मन-मुरीद संसार है, गुरु-मुरीद कोइ साध।
जो मानै गुरु-बचन को, ताको मता अगाध ॥४॥

मन के मारै बन गये, बन तजि बस्ती माहिं।
कह कबीर क्या कीजिए, यह मन ठहरै नाहिं ॥५॥

पहले यह मन काग था, करता जीवन-घात।
अब तो मन हंसा भया, मोती चुगि-चुगि खात ॥६॥

अपने-अपने चोर को, सब कोइ डारै मार।
मेरा चोर मुझे मिलै, सरबस डारूँ वार ॥७॥

मन के हारे हार है, मनके जीते जीत।
कह कबीर पिउ पाइए मनहीं की परतीत ॥८॥

माया कौ अंग

माया मुई न मन मुवा, मरि-मरि गया सरीर।
आसा त्रिसणा ना मुई, यूँ कहि गया कबीर ॥१॥

कबीर सो धन संचिये, जो आगै कूँ होइ।
सीस चढ़ांयें पोटली, ले जात न देख्या कोइ ॥२॥

माया की झल जग जल्या, कनक कामिणी लागि।
कहु धौं किहि विधि राखिये, रुई-लपेटी आगि ॥३॥

---

४. मुरीद=शिष्य। मता=सिद्धान्त।

७. मेरा चोर=मेरा प्रियतम, जिसने मन को चुरा लिया है।

माया कौ अंग

३. झल=ज्वाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माया छाया एक सी, बिरला जानै कोय।
भगतां के पीछैं फिरै, सनमुख भागै सोय ॥४॥

आंधी आई ग्यान की, ढही भरम की भीति।
माया टाटी उड़ि गई, लागी नाम से प्रीति ॥५॥

जिनको साँईं रँग दिया, कभी न होइ कुरंग।
दिन-दिन बानी आगरी, चढ़ै सवाया रंग ॥६॥

कथणी बिना करणी कौ अंग

कबीर पढ़िबा दूरि करि, पुस्तक देइ बहाइ।
बावन आषिर सोधिकरि, ररै ममै चित लाइ ॥१॥

कबीर पढ़िबा दूरि करि, आथि पढ्या संसार।
पीड़ न उपजी प्रीति सूँ, तौ क्यूँकरि करै पुकार ॥२॥

कथनी मीठी खाँड सी, करनी विष की लोइ।
कथनी तजि करनी करै, विष से अमृत होइ ॥३॥

पद जोरैं साखी कहैं, साधन परि गई रौस।
काढ़ा जल पीवैं नहीं, काढ़ि पियन की हौंस ॥४॥

कहता तो बहुता मिला, गहता मिला न कोइ।
सो कहता बहि जानदे, जो नहि गहता होइ ॥५॥

---

६. बानी=आभा, दमक। आगरी=बढ़कर, अधिक-अधिक।

कथणी बिना करणी कौ अंग

१. आषिर=अक्षर। ररै ममै=रकार और मकार ये दो अक्षर, अर्थात् राम।
३. लोइ=गोली।
४. जोरै=रचता है। रौस=चाल-ढाल, रंग-ढंग।
५. गहता=सच्चे अर्थ को ग्रहणकर उसके अनुसार आचरण करनेवाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कामी नर कौ अंग

एक कनक अरु कामनी, विष-फल के ये उपाइ।
देखै हीं थैं विष चढ़ै, खायें सूँ मरि जाइ ॥१॥

भगति बिगाड़ी कामियां, इन्द्री केर सवादि।
हीरा खोया हाथ थैं, जनम गँवाया बादि ॥२॥

कामी लज्या ना करै, मन मांहैं अहिलाद।
नींद न मांगै सांथरा, भूष न मांगै स्वाद ॥३॥

ग्यानी मूल गँवाइया, आपण भये करता।
ताथैं संसारी भला, मन मैं रहैं डरता ॥४॥

परनारी पैनी छुरी, मत कोइ लाओ अंग।
रावन के दस सिर गये, परनारी के संग ॥५॥

साँच कौ अंग

काजी मुल्लाँ भ्रंमयां, चल्या दुनी कै साथि।
दिलथैं दीन बिसारिया, करद लई जब हाथि ॥१॥

कामी नर कौ अंग

२. वादि=व्यर्थ।

२. अहिलाद=आह्लाद, आनन्द। सांथरा=बिस्तर।

४. आपण भये करता=अहंकारवश अपने-आपको सबका कर्त्ता मान बैठे। ताथैं=उससे।

साँच कौ अंग

१. दीन=धर्म। करद=बड़ी छुरी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साँई सेती चोरियां, चोरां सेती गुझ ।
जाणैंगा रे जीवड़ा, मार पड़ैगी तुझ ।।२।।
खूब खांड है खीचड़ी, मांहि पड़ै टुक लूँण ।
पेड़ा रोटी खाइकरि, गला कटावै कूँण ।।३।।
प्रेम-प्रीति का चोलना, पहिरि कबीरा नाच ।
तन मन तापर वारहूँ, जो कोई बोलै सांच ।।४।।
साँच कहूँ तो मारिहैं, झूठे जग पतियाइ ।
ये जग काली कूकरी, जो छेड़ै तो खाइ ।।५।।

भेष कौ अंग

कबीर माला मन की, और संसारी भेष ।
माला पहर्‌याँ हरि मिलै, तौ अरहट कै गलि देष ।।१।।
पष ले बूड़ी पृथमीं, झूठी कुल की लार ।
अलष बिसार्‌या भेष मैं, बूड़े काली धार ।।२।।
चतुराई हरि नाँ मिलै, ए बाताँ की बात ।
एक निसप्रेही निरधार का गाहक गोपीनाथ ।।३।।

---

२. गुझ=गुह्य, गुप्त भेद या सलाह ।

३. खूब=बड़ी बढ़िया, स्वादिष्ट । टुक लूंण=जरा-सा नमक । कूंण=कौन ।

४. चोलना=लंबा ढीला-ढाला कुरता, जिसे फकीर पहनते हैं ।

भेष कौ अंग

१. अरहट=रहँट । गलि=गले में ।

२. पष=पक्ष, संप्रदायवाद । बूड़ी पृथमीं=दुनिया डूब गई । लार=साथ, सम्बन्ध ।

३. बाताँ की बात=सौ बात की एक बात । निसप्रेही=निस्पृह, जिसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जबलग पीव परचा नहीं, कन्या कँवारी जाणि।
हथलेवा हौंसे लिया, मुसकल पड़ी पिछाणि ॥४॥
हम तो जोगी मनहि के, तन के हैं ते और।
मन का जोग लगावते, दसा भई कछु और ॥५॥

संगति कौ अंग

कबीर तन पंषी भया, जहँ मन तहँ उड़ि जाइ।
जो जैसी संगति करै, सो तैसे फल खाइ ॥१॥
काजल केरी कोठड़ी, तैसा यहु संसार।
बलिहारी ता दास की, पैसि ज निकसणहार ॥२॥
कबिरा संगत साधु की, जौ की भूसी खाइ।
खीर खांड भोजन मिलै, साकट संग न जाइ ॥३॥
कबिरा खाई कोट की, पानी पिवै न कोइ।
जाइ मिलै जब गंग से, सब गंगोदक होइ ॥४॥
तोहिं पीर जो प्रेम की, पाका सेती खेल।
काँची सरसों पेरिकै खली भया ना तेल ॥५॥

कोई इच्छा नहीं, कोई स्वार्थ नहीं।

४. हथलेवा=विवाह में वर द्वारा कन्या का हाथ अपने हाथ में लेने की रीति; पाणिग्रहण। हौसें=साहसपूर्ण इच्छा या हौसले से।

संगति कौ अंग

२. पैसि ज निकसणहार=जो पैठकर बिना कालिख लगाये बाहर निकल आये।

३. साकट=शाक्त, वाममार्गी जो मद्य-मांस आदि का सेवन करते थे; हरिविमुख।

५. पाका सेती खेल=पक्के साधु की संगति कर। पेरिकै=पेलकर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साध कौ अंग

मेरे संगी दोइ जणाँ, एक वैष्णों सेक नाम ।
यो है दाता मुकति का, वो सुमिरावै राम ।।१।।

कबीर सोई दिन भला, जा दिन संत मिलाहिं ।
अंक भरे भरि भेंटिया, पाप सरीरौं जाहि ।।२।।

सिहों के लैंहडें नहीं, हंसों की नहिं पाँत ।
लालों की नहिं बोरियाँ, साध न चलें जमात ।।३।।

साध कहावन कठिन है, लंबा पेड़ खजूर ।
चढ़ै तो चाखै प्रेमरस, गिरै तो चकनाचूर ।।४।।

गाँठी दाम न बाँधई, नहिं नारी सों नेह ।
कह कबीर ता साध की हम चरनन की खेह ।।५।।

बृच्छ कबहुँ नहिं फल भखैं, नदी न संचै नीर ।
परमारथ के कारने साधुन धरा सरीर ।।६।।

जाति न पूछो साध की, पूछ लीजिए ग्यान ।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान ।।७।।

साध सापीधूत कौ अंग

संत न छाड़ै संतई, जे कोटिक मिलैं असंत ।
चंदन भुवंगा बैठिया, तउ सीतलता न तजंत ।।१।।

साध कौ अंग

३. लैंडहे=झुंड ।

४. खेह=धूल ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कबीर हरि का भावता दूरैं थैं दीसंत ।
तन षीणाँ मन उनमनां, जग रूठड़ा फिरंत ।।२।।
कबीर हरि का भावता, झीणाँ पंजर तास ।
रैणि न आवै नींदडी, अंगि न चढ़ई माँस ।।३।।
राम-बियोगी तन विकल, ताहि न चीन्हैं कोइ ।
तंबोली के पान ज्यूँ, दिन-दिन पीला होइ ।।४।।
जिहि हिरदैं हरि आइया, सो क्यूँ छानां होइ ।
जतन-जतन करि दाबिये, तऊ उजाला सोइ ।।५।।
सब घटि मेरा सांइयाँ, सूनी सेज न कोइ ।
भाग तिन्हों का हे सखी, जिहि घटि परगट होइ ।।६।।
पावकरूपी राम है, घटि-घटि रह्या समाइ ।
चित चकमक लागै नहीं, ताथैं धूवां ह्वै-ह्वै जाइ ।।७।।

साध-महिमा कौ अंग

है गै गैंवर सघन धन, छत्र धजा फहराइ ।
ता सुख थैं भिष्या भली, हरि-सुमिरत दिन जाइ ।।१।।

साध साषीभूत कौ अंग

२. दीसंत=दीख जाता है । भावता=प्यारा भक्त । षीणां=क्षीण, कृश । उनमनां=उदासीन । रूठड़ा=विरक्त ।

३. पंजर=देह ।

५. छानां=छिपा, गुप्त ।

७. चकमक=एक प्रकार का कड़ा पत्थर, जिसपर चोट पड़ने से फौरन आग निकलती है ।

साध-महिमा कौ अंग

१. है=हय, घोड़ा । गै=गज । गैंवर=गजराज । सघन=अत्यधिक, अखूट ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है गै गैंवर सघन धन, छत्रपती की नारि।
तास पटंतर ना तुलै, हरिजन की पनिहारि ॥२॥

साषत बांभण मति मिलै, बैसनौं मिलै चंडाल।
अंकमाल दे भेंटिये, मानौं मिले गोपाल ॥३॥

विचार कौ अंग

कबीर सोचि विचारिया, दूजा कोई नाहिं।
आपा पर जब चीन्हियां, तब उलटि समाना माहिं ॥१॥

सहज तराजू आनिकरि, सब रस देखा तोल।
सब रस माहीं जीभ-रस, जो कोइ जानै बोल ॥२॥

उपदेस कौ अंग

जो तोकों कांटा बुवै, ताहि बोव तू फूल।
तोहि फूल को फूल है, वाको है तिरसूल ॥१॥

दुरबल को न सताइए, जाकी मोटी हाय।
बिना जीव की स्वाँस से लोह भसम ह्वै जाय ॥२॥

फरराइ=फहराये। भिष्या=भिक्षा।

२. पटंतर=तुलना, उपमा। पनिहारि=पानी भरनेवाली नौकरानी॥

३. साषत=शाक्त, वाममार्गी। अंकमाल=आलिंगन, गले लगाना।

विचार कौ अंग

१. तव उलटि समाना माहिं=विषयों की ओर से मुड़कर अंतर्मुखी तथा ब्रह्मलीन हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

या दुनिया में आइके छांड़ि देइ तू ऐंठ।
लेना होइ सो लेइ ले, उठी जात हैं पैंठ ॥३॥
आवत गारी एक है, उलटत होय अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक ॥४॥
पढ़ि-पढ़िके पत्थर भये, लिखि-लिखि भये जो ईंट।
कबिरा अंतर प्रेम की लागी नेक न छींट ॥५॥
न्हाए धोए क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोए बास न जाय ॥६॥
ऊँचे गाँव पहाड़ पर, औ मोटे की बाँह।
ऐसो ठाकुर सेइए, उबरिय जाकी छाँह ॥७॥

सम्रथाई कौ अंग

सात समंद की मसि करौं, लेखनि सब बनराइ।
धरती सब कागद करौं, तऊ हरिगुण लिख्या न जाइ ॥१॥
साँईं मेरा बाणियाँ, सहजि करै व्यौपार।
बिन डांडी बिन पालड़ै, तोलै सब संसार ॥२॥
साँईं सूँ सब होत है, बंदे थैं कुछ नाहिं।
राई थैं परबत करै, परबत राई माहिं ॥३॥
साहेब-सा समरथ नहीं, गरुआ गहिर गँभीर।
औगुन छौडै गुन गहै, छिनक उतारै तीर ॥४॥

---

२. जीभ-रस=सच्ची मीठी वाणी; प्रभु-नाम का उच्चारण।

उपदेस कौ अंग

३. ऐंठ=अभिमान। पैंठ=हाट।

सम्रथाई कौ अंग

१. बनराइ=वृक्ष-समूह।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाको राखै साँइयाँ, मारि न सक्कै कोय।
बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय ॥५॥

सबद कौ अंग

कबीर सबद सरीर मैं, बिनि गुण बाजै तंति।
बाहरि भीतरि भरि रह्या, ताथैं छूटि भरंति ॥१॥

ज्यूँ-ज्यूँ हरिगुण साँभलौं, त्यूँ-त्यूँ लागै तीर।
लागैं थैं भागा नहीं, साहणहार कबीर ॥२॥

सब्द बराबर धन नहीं, जो कोइ जानै बोल।
हीरा तो दामों मिलै, सब्दहिं मोल न तोल ॥३॥

सीतल सब्द उचारिए, अहम् आनिए नाहिं।
तेरा प्रीतम तुज्झ में, सत्रू भी तुझ माहिं ॥४॥

जीवनमृतक कौ अंग

जीवन थैं मरिबो भलौ, जौ मरि जानैं कोइ।
मरनैं पहलें जे मरें, तौ कलि अजरावर होइ ॥१॥

आपा मेट्याँ हरि मिलैं, हरि मेट्याँ सब जाइ।
अकथ कहाणी प्रेम की, कह्याँ न को पत्याइ ॥२॥

सबद कौ अंग

१. गुण=तार से तात्पर्य है। तंति=तंत्री, वीणा। भरंति-भ्रांति।
२. साँभलौं=स्मरण व ध्यान करता हूँ। साहणहार=सहनेवाला।

जीवनमृतक कौ अंग

१. मरनैं···होइ=मरने से पहले ही जो देह को नाशवान या मृत समझले, वह अजर और अमर हो जाय। कलि=कल, तुरन्त।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मैं मरजीव समुन्द्र का, डुबकी मारी एक।
मूठी लाया ग्यान की, जामें वस्तु अनेक ॥३॥
रोड़ा भया तो क्या भया, पंथी को दुख देय।
साधू ऐसा चाहिए, ज्यों पैंडे की खेह ॥४॥
खेह भई तो क्या भया, उड़ि-उड़ि लागै अंग।
साधू ऐसा चाहिए, जैसे नीर निपंग ॥५॥
नीर भया तो क्या भया, ताता सीरा जोय।
साधू ऐसा चाहिए, जो हरि जैसा होय ॥६॥
हरि भया तो क्या भया, करता हरता होय।
साधू ऐसा चाहिए, हरि भज निरमल होय ॥७॥
निरमल भया तो क्या भया, निरमल माँगै ठौर।
मल निरमल से रहित है, ते साधू कोइ और ॥८॥

सूरातन कौ अंग

सूरा तबहीं परषिये, लड़ै धणीं कै हेत।
पुरिजा-पुरिजा ह्वै पड़ै, तऊ न छाड़ै खेत ॥१॥
अब तौ झूझ्याँ हीं बणैं, मुड़ि चाल्या घर दूरि।
सिर साहिब कौं सौंपता, सोच न कीजै सूर ॥२॥

---

३. मरजीवा=जो कार्य-सिद्धि के लिए प्राण देने पर उतारू हो जाय।
४. पैंडे की खेह=रास्ते की धूल।
५. निपंग=बिना पंक का, स्वच्छ।
६. ताता-सीरा=गरम और ठंडा।

सूरातन कौ अंग

१. पुरिजा-पुरिज़ा=टुकड़ा-टुकड़ा।
२. झूझ्यां ही बणैं=जूझना ही होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
सीस उतारै हाथि करि, सो पैसै घर माहिं ॥३॥

प्रेम न खेतौं नीपजै, प्रेम न हाटि बिकाइ।
राजा परजा जिस रुचै, सिर दे सो ले जाइ ॥४॥

भगति दुहेली राम की, जसि खांडे की धार।
जे डोले तौ कटि पड़ै, नहीं तौ उतरै पार ॥५॥

भगति दुहेली राम की, जैसि अगनि की झाल।
डाकि पड़े ते ऊबरे, दाधे कौतिगहार ॥६॥

सिर राखे सिर जात है, सिर काटे सिर सोय।
जैसे बाती दीप की, कटि उंजियारा होय ॥७॥

खोजी को डर बहुत है, पल-पल पड़ै विजोग।
प्रन राखत जो तन गिरै, सो तन साहेबजोग ॥८॥

तीर तुपक से जो लड़ै, सो तो सूर न होय।
माया तजि भक्ती करै, सूर कहावै सोय ॥९॥

काल कौ अंग

बारी बारी आपणीं, चले पियारे म्यंत।
तेरी बारी रे जिया, नेड़ी आवै नित ॥१॥

---

३. खाला=मौसी। पैसे=पैठे

६. झाल=ज्वाला। डाकि पड़े=फाँद जाय, लांघ जाय। कौतिगहार=तमाशा देखनेवाले।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मालिन आवत देख करि, कलिया करीं पुकार।
फूली-फूली चुनि लईं, कल्हि हमारी बारि ॥२॥

फागुण आवत देखिकरि, बन रूना मन माहिं।
ऊंची डाली पात है, दिन-दिन पीले थाहिं ॥३॥

जो ऊग्या सो आँथिवै, फूल्या सो कुमिलाइ।
जो चिणियां सो ढहि पड़ै, जो आया सो जाइ ॥४॥

पात पडंता यौं कहै, सुनि तरवर बनराइ।
अब के बिछुड़े ना मिलैं, कहिं दूर पड़ैंगे जाइ ॥५॥

मेरे बीर लुहारिया, तूँ जिनि जालै मोहिं।
इक दिन ऐसा होइगा, हूँ जालौंगी तोहिं ॥६॥

काएँ चिणांवै मालिया, लांबी भीति उसारि।
घर तौ साढ़ी तीनि हथ, घणौं तौ पौणां चारि ॥७॥

बरियां बीती बल गया, अरु बुरा कमाया।
हरि जिन छाड़ै हाथ थैं, दिन नेड़ा आया ॥८॥

रोवणहारे भी मुए, मुए जलांवणहार।
हा हा करते ते मुए, कासनि करौं पुकार ॥९॥

काल कौ अंग

३. रूना=उदास, दुखी। थाहिं=हो रहे हैं।

४. जो····आँथिवै=जो उदय हुआ वह अस्त होगा। चिणिया=चिना, बनाया।

६. बीर=भाई।

७. मालिया=धनी। उसारि=दालान, बरामदा। घर=कब्र या स्मशान से अभिप्राय है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पारिष कौ अंग

हीरा तहाँ न खोलिए, जहँ खोटी है हाटि।
कसकरि बाँधो गाठरी, उठकरि चालो बाट ॥१॥

हंसा बगुला एक-सा मानसरोवर माहिं।
बगा ढंढोरैं माछरी, हंसा मोती खाहिं ॥२॥

चंदन गया बिदेसड़े, सब कोइ कहै पलास।
ज्यों-ज्यों चूल्हे झोंकिया, त्यों-त्यों अधकी बास ॥३॥

ग्यान-रतन की कोठरी, चुप करि दीन्हों ताल।
पारखि आगे खोलिए, कुंजी बचन रसाल ॥४॥

हीरा पड़ा बजार में, रहा छार लपटाय।
बहुतक मूरख चलि गए, पारखि लिया उठाय ॥५॥

निंद्या कौ अंग

निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाणी बिना, निरमल करै सुभाइ ॥१॥

कबीर घास न नींदिये, जो पाऊँ तलि होइ।
ऊड़ि पड़ै जब आँखि मैं, खरा दुहेला होइ ॥२॥

पारिष कौ अंग

२. ढंढ़ोरैं=खोजता है।

४. ताल=ताला। कुंजी वचन रसाल=मीठे वचन की चाभी से।

५. छार=धूल।

निंद्या कौ अंग

१. सुभाइ=सहज ही।

२. न नींदिये=निंदा न करे। खरा दुहेला=बहुत ही मुश्किल, भारी तकलीफ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कबीर आप ठगाइये, और न ठगिये कोइ।
आप ठग्यां सुख ऊपजै, और ठग्यां दुख होइ ॥३॥
अबकै जे सांईं मिलै, तौ सब दुख आषौं रोइ।
चरनूँ ऊपरि सीस धरि, कहूँ ज कहणा होइ ॥४॥
सातो सायर मैं फिरा, जंबुदीप दै पीठ।
निंद पराई ना करै, सो कोइ परला दीठ ॥५॥

बीनती कौ अंग

कबीर साईं तो मिलहिंगे, पूछहिंगे कुसलात।
आदि अंति की कहूँगा, उर अंतरि की बात ॥१॥
करता केरे बहुत गुण, औगुण कोई नाहिं।
जे दिल खोजौं आपणा, तौ सब औगुण मुझ माहिं ॥२॥
ज्यूँ मन मेरा तुझ सौं, यौं जे तेरा होइ।
ताता लोहा यौं मिलै, संधि न लखई कोइ ॥३॥
सुरति करौ मेरे साँइयाँ, हम हैं भवजल माहिं।
आपे ही बहि जाहिंगे, जो नहिं पकरौ बाहिं ॥४॥
क्या मुख लै बिनती करौं, लाज आवत है मोहिं।
तुम देखत अवगुन करौं, कैसे भावों तोहिं ॥५॥

---

४. आषौं=कहूँ।

५. जंबुदीप दै पीठ=जंबूद्वीप (अपने घर से) चलकर। परला=विरला।

बीनती कौ अंग

३. ताता=गरम। संधि=जोड़।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अवगुन मेरे बापजी, बकस गरीब-निवाज।
जो मैं पूत कपूत हौं, तऊ पिता कों लाज ॥६॥

मन परतीति न प्रेमरस, ना कछु तन में ढंग।
ना जानौं उस पीव से, क्योंकरि रहसी रंग ॥७॥

मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कछु है सो तोर।
तेरा तुझको सोंपते, क्या लागत है मोर ॥८॥

तुम तो समरथ साँइयाँ, दृढ़करि पकरो बाहिं।
धुरही लै पहुँचाइयो, जनि छाँड़ो मग माहि ॥९॥

विविध

तरवर, सरवर, संतजन, चौथे बरसै मेह।
परमारथ के कारने, चारौं धारैं देह ॥१॥

कबिरा मैं तो तब डरौं, जो मुझ ही में होय।
मीच, बुढ़ापा, आपदा, सब काहू में सोय ॥२॥

देहधरे का दंड हैं, सब काहू को होय।
ग्यानी भुगतै ग्यान करि, मूरख भुगतै रोय ॥३॥

जूआ, चोरी, मुखबिरी, ब्याज, घूस, परनार।
जो चाहै दीदार को, एती बस्तु निवार ॥४॥

---

७. रहसी रंग=प्रीति निभेगी।

विविध

२. मीच=मौत।

४. मुखबिरी=भेद की खबर देने का काम, जासूसी। दीदार=ईश्वर का दर्शन।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राज-दुवारे साधुजन तीनि वस्तु कों जाय ।
कै मीठा, कै मान कों, कै माया की चाय ।।५।।

करु बहियाँ बल आपनी, छाँड बिरानी आस ।
जाके आँगन नदी है, सो कस मरै पिआस ।।६।।

लिखापढ़ी में परे सब, यह गुण तजै न कोइ ।
सबै परे भ्रम-जाल में, डारा यह जिय खोइ ।।७।।

मानुष तेरा गुण बड़ा, मांस न आवै काज ।
हाड़ न होते आभरण, त्वचा न बाजै बाज ।।८।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१४

वियोगी हरिजी की अन्य पुस्तकें

१. संत सुधासार
२. बुद्ध-वाणी
३. श्रद्धाकण
४. पावभर आटा
५. मेरा जीवनप्रवाह
६. प्रार्थना
७. संतवाणी
८. स्वामी दादूदयाल

पचास नये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu